प्रतिदर्श

प्रश्न-पत्र 5

व्याख्या सहित (प्रश्न-उत्तर)

हिंदी 'ब'

CBSE कक्षा 10 की परीक्षा के लिए नमूना प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

निर्देश
1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं—'अ' और 'ब'।
2. खंड 'अ' में कुल 9 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड {अ} *वस्तुपरक प्रश्न (40 अंक)*

अपठित गद्यांश

1. *नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1×5 = 5)

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है—'अनेकता में एकता।' यद्यपि ऊपरी तौर पर भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है, तथापि अपने आचार-विचारों की एकता के कारण यहाँ सदा सामाजिक संस्कृति का रूप देखने को मिलता है। अत: इसकी प्राचीनता, गतिशीलता, लचीलापन, ग्रहणशीलता, सामाजिक स्वरूप और अनेकता के भीतर मौजूद एकता ही इसकी प्रमुख विशेषता है। इस विशेषता के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत प्राचीन है। वास्तव में, संस्कृति का निर्माण एक लंबी परंपरा के बाद होता है। संस्कृति वस्तुत: विचार और आचरण के वे नियम और मूल्य है, जिन्हें कोई समाज अपने अतीत से प्राप्त करता है। इसलिए कहा जा सकता है कि इसे हम अपने अतीत से विरासत के रूप में प्राप्त करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो संस्कृति एक विशिष्ट जीवन-शैली का नाम है। यह एक सामाजिक विरासत है, जो परंपरा से चली आ रही है। प्राय: सभ्यता और संस्कृति को एक ही मान लिया जाता है, परंतु इसमें भेद है। सभ्यता में मनुष्य के जीवन का भौतिक पक्ष प्रधान होता है अर्थात् सभ्यता का अनुमान सुख-सुविधाओं से लगाया जा सकता है। इसके विपरीत संस्कृति में आचार और विचार पक्ष की प्रधानता होती है।

(क) भारत में सामाजिक संस्कृति का रूप किस कारण देखने को मिलता है? (1)

(i) प्राचीन सभ्यता के कारण
(ii) आचार-विचारों की एकता के कारण
(iii) भौतिक पक्ष के कारण
(iv) सदाचार के कारण

(ख) गद्यांश के अनुसार भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता क्या है? (1)

(i) गतिशीलता
(ii) ग्रहणशीलता
(iii) एकता
(iv) ये सभी

(ग) जीवन के भौतिक पक्ष की प्रधानता किसमें होती है?
(i) संस्कृति में (ii) सभ्यता में
(iii) सिद्धांत में (iv) प्रदेश में

(घ) निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(i) भारतीय समाज और इतिहास (ii) भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ और स्वरूप
(iii) भारतीय संस्कृति : अनेकता में एकता (iv) प्राचीन सभ्यता और संस्कृति

(ङ) परंपरा से चली आ रही सामाजिक विरासत किसे कहा गया है?
(i) प्रदेशों में व्याप्त विभिन्नता को (ii) सामाजिक मूल्य को
(iii) सभ्यता को (iv) संस्कृति को

उत्तर

(क) (ii) **आचार-विचारों की एकता के कारण** गद्यांश के अनुसार भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है, लेकिन फिर भी आपने आचार-विचारों की एकता के कारण यहाँ सदा सामाजिक संस्कृति का रूप देखने को मिलता है।

(ख) (iv) **ये सभी** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्राचीनता, गतिशीलता, लचीलापन, ग्रहणशीलता, सामाजिक स्वरूप और अनेकता में भीतर मौजूद एकता ही भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।

(ग) (iii) **सभ्यता में** गद्यांश के अनुसार, सभ्यता में मनुष्य के जीवन का भौतिक पक्ष प्रधान होता है अर्थात् सभ्यता का अनुमान सुख-सुविधाओं से लगाया जा सकता है।

(घ) (iii) **भारतीय संस्कृति: अनेकता के एकता** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक भारतीय संस्कृति: अनेकता में एकता होगा, क्योंकि गद्यांश में भारतीय संस्कृति की इसी विशेषता पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया है।

(ङ) (iv) **संस्कृति को** गद्यांश के अनुसार संस्कृति एक विशिष्ट जीवन-शैली का नाम है। यह एक सामाजिक विरासत है, जो परंपरा से चली आ रही है।

अथवा

जीवन में सफल वही होता है, जो उपयुक्त चुनाव करना जानता है। चुनाव करने में तनिक भी भूल-चूक हुई, तो हानि सुनिश्चित होती है। किसी भी क्षेत्र में चुनाव करने से पूर्व अनेकों चिंतन योग्य विषय होते हैं, जिनको नज़रअंदाज करने से संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया नष्ट व अर्थहीन हो जाती है जिससे परिश्रम का कोई फल प्राप्त नहीं होता, हालाँकि कुछ चुनाव हमारे वश में नहीं होते; जैसे—माता-पिता का, जन्म-मृत्यु का, आदि किंतु कुछ चुनाव हमारे वश में होते हैं, जिन पर हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है; जैसे—अच्छी-बुरी संगति का चुनाव, आलस्य और परिश्रम का चुनाव आदि। 'संगति का चुनाव' इन सब चुनावों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस चुनाव पर हमारा आचरण, कर्म, विचार, भाषा, स्तर, मनुष्यता और हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है।

मनुष्य का चित्त बुराइयों और बुरे लोगों की ओर जल्दी आकृष्ट होता है। जिस तरह पानी सदा नीचे की ओर जाता है, उसी तरह मनुष्य का मन भी बुराइयों की ओर शीघ्र भागता है। जिस प्रकार ऊँचाई तक जाने में कष्ट उठाना पड़ता है, उसी प्रकार अच्छाई की ओर जाने में परिश्रम करना पड़ता है। हम विवेक से काम लेकर अच्छे और बुरे का चुनाव कर सकते हैं और इसी विवेक के आधार पर जीवन में सफलता पा सकते हैं।

(क) गद्यांश के आधार पर सफल व्यक्ति की क्या पहचान बताई गई है?
(i) उपयुक्त चुनाव (ii) आलस्यपूर्ण जीवन
(iii) चित्त में बुराइयाँ (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा चुनाव हमारे वश में नहीं होता है?
(i) अच्छी-बुरी संगति का (ii) माता-पिता का
(iii) आलस्य और परिश्रम का (iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) गद्यांश के आधार पर बताइए कि संगति का चुनाव सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है?
(i) इस पर हमारा आचरण निर्भर करता है (ii) हमारे कर्म निर्भर करते है
(iii) हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है (iv) ये सभी

(घ) गद्यांश में मानव मन की तुलना किससे की गई है?
(i) बुराइयों से (ii) पानी से
(iii) परिश्रम से (iv) इनमें से कोई नहीं

(झ) मनुष्य का चित्त किस ओर जल्दी आकृष्ट होता है?
(i) बुराइयों और बुरे लोगों की ओर
(ii) अच्छाइयों की ओर
(iii) परीक्षण की ओर
(iv) इनमें से कोई नहीं

उत्तर

(अ) (i) उपयुक्त चुनाव गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जीवन में सफल वही है, जो उपयुक्त चुनाव करना जानता है, क्योंकि हमारी उन्नति व अवनति का आधार उपयुक्त चुनाव ही है। सही चुनाव करेंगे तो उन्नति करेंगे, सफल होंगे, किंतु गलत चुनाव करेंगे तो अवनति की ओर अग्रसर रहेंगे।

(आ) (ii) माता-पिता का गद्यांश में बताया गया है कि कुछ चुनाव हमारे वश में नहीं होते हैं; जैसे-माता-पिता का, जन्म-मृत्यु का आदि। (इ) (iii) ये सभी 'उन्नति का चुनाव' सभी चुनावों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है, क्योंकि इस चुनाव पर हमारा आचरण, कर्म, विचार, भाषा और हमारी सफलता-असफलता निर्भर करती है।

(ई) (ii) पानी की मानव मन की तुलना पानी से की गई है, क्योंकि जिस प्रकार पानी नीचे की ओर जाने में समय नहीं लगाता और ऊपर की ओर आने में समय लगाता है, उसी प्रकार, मनुष्य का हृदय भी बुराइयों की ओर शीघ्र ही बिना समय लगाए अग्रसर हो जाता है, किंतु यहीं इसे अच्छाइयों की ओर जाने में समय लगता है।

(उ) (i) बुराइयों और बुरे लोगों की ओर गद्यांश में बताया गया है कि मनुष्य का चित्त बुराइयों और बुरे लोगों की ओर जल्दी आकृष्ट होता है।

2. *नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1 × 5 = 5)

हमारी प्राचीन संस्कृति का मूल आधार है—अहिंसा, संयम, त्याग, धर्म और अध्यात्म पर आधारित जीवन। यही कारण है कि हमारे आदर्श श्रीराम, महात्मा बुद्ध और श्रीकृष्ण योग का संदेश देते हैं। आज समाज में एक नई जीवन-शैली का प्रवेश हो रहा है, जिसने सारे समाज को अपने अनुसार परिवर्तित करना शुरू कर दिया है। समाज में एक नया दर्शन दिखाई दे रहा है। यह दर्शन है—उपभोक्तावाद का दर्शन। इस दर्शन के अंतर्गत चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। आज सुख की प्राचीन परिभाषा बदल गई है। आज उपभोग-भोग को ही सुख माना जाता है। पूरी दुनिया इसी सुख के अनुसार अपने जीवन को सुखमय बनाने के फेर में लगी हुई है।

आज बाज़ार का सारा जोर चमक-दमक और अपने उत्पाद से ग्राहक को ललचाने में लगा हुआ है। बाजार में वस्तुओं को बेचने में यह भावना कार्य कर रही है कि उत्पाद ऊपरी रूप से सजावट से परिपूर्ण हो। इससे जीवन मूल्य तेजी से समाप्त हो रहे हैं। बनावट और प्रदर्शनपूर्ण जीवन-शैली ने समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। जिस उत्पाद को उच्च व संभ्रांत वर्ग अपनाता है, उसे सामान्य-जन भी अपनाने के लिए तत्पर रहता है। इससे समाज में दिखावे की संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा है।

(अ) गद्यांश के आधार पर बताइए कि हमारी प्राचीन संस्कृति का मूलाधार क्या है?
(i) अहिंसा
(ii) संयम
(iii) त्याग
(iv) ये सभी

(ब) आज समाज में नई जीवन-शैली के प्रवेश ने क्या शुरू कर दिया है?
(i) प्रदर्शनपूर्ण जीवन-शैली को बढ़ाना
(ii) सारे समाज को अपने अनुसार परिवर्तित करना
(iii) उत्पाद को उच्च दर पर बेचना
(iv) इनमें से कोई नहीं

(स) समाज में दिखावे की संस्कृति को किस प्रकार बढ़ावा मिल रहा है?
(i) उच्च वर्ग द्वारा अपनाए उत्पाद को सामान्यजन भी अपनाने को तत्पर
(ii) उच्च वर्ग द्वारा श्रेष्ठ सामान को उपयोग में लाकर
(iii) जीवन को आरामदायक बनाकर
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(द) गद्यांश के आधार पर बताइए कि वर्तमान में बाज़ार का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(i) अध्यात्म पर आधारित जीवन
(ii) चमक-दमक और अपने उत्पादों से ग्राहक को ललचाना
(iii) उपभोक्तावाद का दर्शन
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ई) उपभोक्तावाद दर्शन के अंतर्गत क्या किया जा रहा है?
(i) उत्पादन को घटाने पर बल दिया जा रहा है
(ii) उत्पादन को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है
(iii) उत्पादन की गिरावट को देखा जा रहा है
(iv) इनमें से कोई नहीं

उत्तर

(क) (iv) ये सभी गद्यांश की आरंभिक पंक्ति में स्पष्ट किया गया है कि हमारी प्राचीन संस्कृति का मूलाधार अहिंसा, संयम, त्याग, धर्म आदि है।

(ख) (ii) सारे समाज को अपने अनुसार परिवर्तित करना आज समाज में नई जीवन-शैली के प्रवेश ने सारे समाज को अपने अनुसार परिवर्तित करना शुरू कर दिया है।

(ग) (i) उच्च वर्ग द्वारा अपनाए उत्पाद को सामान्यजन भी अपनाने को तत्पर जिस उत्पाद को उच्च व शिष्ट वर्ग अपनाता है, उसे सामान्यजन भी अपनाने के लिए तत्पर रहता है। इसी से दिखावे की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

(घ) (ii) चमक-दमक और अपने उत्पादों से ग्राहक को ललचाना आज बाजार का मुख्य उद्देश्य चमक-दमक और अपने उत्पादों से ग्राहक को ललचाना है, क्योंकि वस्तु जितनी अधिक आकर्षक व चमकदार होगी, लोग उतना ही ज्यादा उसकी ओर आकर्षित होंगे और जितना ज्यादा लोग वस्तु की ओर आकर्षित होंगे उतनी ही वस्तु की खरीदारी बढ़ेगी।

(ङ) (ii) उत्पादन को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है गद्यांश के अनुसार, उपभोक्तावाद दर्शन के अंतर्गत आज उत्पादन को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है।

अथवा

साहसी जीवन सबसे श्रेष्ठ जीवन होता है। ऐसे जीवन की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर और साहसी होता है। किसी भी कार्य की सफलता के लिए ध्येय के प्रति उत्कट लगन, कार्य में अटूट श्रद्धा एवं अपनी शक्तियों में पर्याप्त विश्वास आवश्यक है। विश्वास, एकाग्रता, लगन, संतुलन, श्रद्धा आदि सभी साहस पर निर्भर हैं, क्योंकि मनुष्य का सबसे प्रथम गुण साहस है। साहस अन्य सब गुणों का प्रतिनिधित्व करता है। यदि तन, मन तथा वाणी सशक्त हो तो इनके द्वारा प्राप्त कार्य-शक्ति के आगे भाग्य स्वयं नत-मस्तक हो जाता है। साहसी की प्रतिभा के सामने शोक, भय आदि टिक नहीं पाते हैं। साहसी को संसार भी रास्ता देता है। मनुष्य में सभी गुण हों, वह विद्वान् हो, धनवान हो, शक्तिशाली हो, पर यदि उसमें साहस न हो तो वह अपने सद्गुणों, अपनी योग्यताओं व अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर सकता। साहस मनुष्य के व्यक्तित्व का नायक है। साहस व्यक्ति को निर्भय बनाता है और जहाँ निर्भयता होती है वहाँ सफलता निश्चित है। निर्भयता से ही आत्मविश्वास जाग्रत होता है। आत्मविश्वास के अभाव में हम उस प्रत्येक कार्य को करते हुए डरेंगे जो हमने पहले नहीं किया और जो बिलकुल नया है। जिनके संकल्प अधूरे होते हैं, जो संशयग्रस्त होते हैं अथवा वे कोई बड़ा काम नहीं कर पाते और यदि कुछ करते भी हैं तो उसमें असफल हो जाते हैं।

(क) किसी भी कार्य की सफलता के लिए क्या आवश्यक है? 1

(i) ध्येय के प्रति उत्कट लगन
(ii) कार्य में अटूट श्रद्धा
(iii) अपनी शक्तियों में पर्याप्त विश्वास
(iv) ये सभी

(ख) मनुष्य का प्रथम गुण क्या बताया गया है? 1

(i) विश्वास
(ii) साहस
(iii) भाग्य
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) भाग्य स्वयं किसके आगे नत-मस्तक हो जाता है? 1

(i) तन, मन व वाणी से प्राप्त होने वाली कार्य शक्ति के आगे
(ii) श्रद्धा के आगे
(iii) भाग्य के आगे
(iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) असफल होने वाले व्यक्ति की क्या पहचान बताई गई है? 1

(i) संशयग्रस्त होना
(ii) संतुलित होना
(iii) सशक्त होना
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक क्या करना चाहता है? 1

(i) मनुष्य में सद्गुणों का विकास करना
(ii) मनुष्य के भीतर साहस व आत्मविश्वास की भावना का विस्तार करना
(iii) मनुष्य को संशयग्रस्त स्थिति में ले जाना
(iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर

(क) (iv) ये सभी गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए ध्येय के प्रति उत्कट लगन, कार्य में अटूट श्रद्धा तथा अपनी शक्तियों में पर्याप्त विश्वास होना आवश्यक है।

(ब) (ii) साहस गद्यांश में मनुष्य का प्रथम गुण साहस को बताया गया है, क्योंकि विश्वास, एकाग्रता, लगन, संतुलन, श्रद्धा आदि सब साहस पर ही निर्भर हैं।

(स) (i) **तन, मन व वाणी से प्राप्त होने वाली कार्यशक्ति के आगे** गद्यांश में बताया गया है कि यदि व्यक्ति का तन, मन तथा वाणी सशक्त हो तो, उससे प्राप्त होने वाली कार्यशक्ति के आगे भाग्य नत-मस्तक हो जाता है।

(द) (i) **संशयग्रस्त होना** गद्यांश में बताया गया है कि संशयग्रस्त होना ही असफल व्यक्ति की पहचान है, क्योंकि जिनके संकल्प अधूरे होते हैं, जो संशयग्रस्त होते हैं, वे कोई बड़ा काम नहीं कर पाते।

(य) (iii) **मनुष्य के भीतर साहस व आत्मविश्वास की भावना का विस्तार करना** प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक मनुष्य के भीतर साहस व आत्मविश्वास की भावना का विस्तार करना चाहता है।

व्यावहारिक व्याकरण

3. *निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4 = 4)

(क) 'जो मेहनत करता है, उसे सफलता अवश्य मिलती है।' वाक्य में रेखांकित पदबंध है (1)
(i) संज्ञा पदबंध
(ii) विशेषण पदबंध
(iii) सर्वनाम पदबंध
(iv) क्रिया विशेषण पदबंध

(ख) 'अखिलेश जानता है कि पास होना कठिन है।' रेखांकित में पद है (1)
(i) क्रिया पद
(ii) सर्वनाम पद
(iii) विशेषण पद
(iv) संज्ञा पद

(ग) 'वह तेज भागते-भागते बहुत थक गया है।' वाक्य में विशेषण पदबंध है (1)
(i) वह
(ii) तेज भागते-भागते
(iii) बहुत
(iv) थक गया है

(घ) 'सफेद कमीज वाला लड़का खेल रहा है।' वाक्य में रेखांकित पदबंध है (1)
(i) क्रिया पदबंध
(ii) विशेषण पदबंध
(iii) संज्ञा पदबंध
(iv) सर्वनाम पदबंध

(ङ) 'भाग्य की मारी तुम कहाँ जाओगी?' रेखांकित में कौन-सा पदबंध है? (1)
(i) सर्वनाम पदबंध
(ii) संज्ञा पदबंध
(iii) विशेषण पदबंध
(iv) क्रिया विशेषण पदबंध

उत्तर

(क) (ii) विशेषण पदबंध (ख) (iv) संज्ञा पद (ग) (ii) तेज भागते-भागते (घ) (i) क्रिया पदबंध
(ङ) (i) सर्वनाम पदबंध

4. *निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4 = 4)

(क) किसान ने खेत में नाली बनाकर अपने खेत की सिंचाई की। वाक्य रचना की दृष्टि से है- (1)
(i) सरल वाक्य
(ii) मिश्र वाक्य
(iii) संयुक्त वाक्य
(iv) सामान्य वाक्य

(ख) संध्या ने पेन माँगा और वह उसे मिल गया, का मिश्र वाक्य बनेगा (1)
(i) संध्या ने जो पेन माँगा था, वह उसे मिल गया
(ii) संध्या को वह पेन मिल गया जो उसने माँगा था
(iii) यद्यपि संध्या ने पेन माँगा, तथापि उसे मिल गया
(iv) संध्या के पेन माँगते ही उसे मिल गया

(ग) रजनी बीमार है तथा उसने दवा नहीं ली, का सरल वाक्य बनेगा (1)
(i) रजनी बीमार है, क्योंकि उसने दवा नहीं ली
(ii) बीमार रजनी ने दवा नहीं ली
(iii) दवा न लेने के कारण रजनी बीमार है
(iv) जब रजनी ने दवा नहीं ली तब वह बीमार हो गई

(घ) निम्नलिखित में संयुक्त वाक्य है (1)
(i) दिनभर वर्षा होने के कारण वह नहीं आया
(ii) वह नहीं आया, क्योंकि दिनभर वर्षा होती रही
(iii) दिनभर वर्षा होती रही तो वह नहीं आया
(iv) जब दिनभर वर्षा होगी तब वह कैसे आएगा

(ङ) निम्नलिखित में सरल वाक्य है

(i) इतना कहा, इसलिए सरिता नहीं आई
(ii) इतने कहने पर से सरिता नहीं आई
(iii) सरिता नहीं आई, क्योंकि इतना कहा गया
(iv) इतना कहने पर भी सरिता नहीं आई

उत्तर

(क) (i) सरल वाक्य
(ख) (i) शोभा ने जो पेन माँगा था, वह उसे मिल गया
(ग) (ii) बीमार रजनी ने दवा नहीं ली
(घ) (ii) वह नहीं आया, क्योंकि दिनभर वर्षा होती रही
(ङ) (iv) इतना कहने पर भी सरिता नहीं आई

5. *निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4=4)

(क) 'सत्याग्रह' शब्द में कौन-सा समास है?

(i) संप्रदान तत्पुरुष समास
(ii) अव्ययीभाव समास
(iii) द्विगु समास
(iv) द्वंद्व समास

(ख) 'महादेव' समस्त पद का विग्रह होगा

(i) महान् और देव
(ii) महान् है जो देव
(iii) देव के लिए महान्
(iv) देव रूपी महात्मा

(ग) 'शक्ति के अनुसार' का सामासिक पद क्या होगा?

(i) शक्तिशाली
(ii) अशक्ति
(iii) बेशक्ति
(iv) यथाशक्ति

(घ) 'लम्बोदर' शब्द के लिए सही समास-विग्रह का चयन कीजिए।

(i) लम्बा तथा उदर - द्वंद्व समास
(ii) लम्बा उदर है जो - कर्मधारय समास
(iii) लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश-बहुव्रीहि समास
(iv) लम्बाई के लिए उदर - तत्पुरुष समास

(ङ) 'बेलगाम' समस्त पद का विग्रह होगा

(i) बिना लगाम के
(ii) जिसके लगाम न हो
(iii) बे लगाम है जो
(iv) लगाम के बिना

उत्तर

(क) (i) संप्रदान तत्पुरुष समास
(ख) (ii) महान् है जो देव
(ग) (iv) यथाशक्ति
(घ) (iii) लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश - बहुव्रीहि समास
(ङ) (i) बिना लगाम के

6. *निम्नलिखित चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4=4)

(क) भारतवर्ष की उन्नति देख चीन के .... लगते हैं। रिक्त स्थान की पूर्ति सटीक मुहावरे से कीजिए।

(i) कलेजे पर साँप लोटना
(ii) हिम्मत बढ़ाना
(iii) फूला न समाना
(iv) कंगाली में आटा गीला होना

(ख) दुनिया में उन्हीं लोगों के .... जो अपने देश पर कुर्बान होते हैं। रिक्त स्थान की पूर्ति सटीक मुहावरे से कीजिए।

(i) दिल बड़े हैं
(ग) झंडे गड़े हैं
(iii) सफेद झूठ हैं
(iv) पापड़ बेलने हैं

(ग) मेहनतकश वर्ग .... अपने दिन काट रहा है। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) रंग बदलकर
(ii) फूला न समाकर
(iii) रो-धोकर
(iv) सिर पर कफन बाँधकर

(घ) विभीषण ने राम को रावण के सभी रहस्य बताकर .... कार्य किया। रिक्तस्थान की पूर्ति सटीक मुहावरे से कीजिए।

(i) विष घोलने का
(ii) सिर खपाने का
(iii) मक्खी मारने का
(iv) हाथ पीले करने का

उत्तर

(क) (i) कलेजे पर साँप लोटना (ख) (ii) डंडे गढ़े (ग) (iii) रो-धोकर (घ) (i) विष घोलने का

पाठ्य-पुस्तक

7. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए। (1 × 4 = 4)

ऐसी बाँनी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौ सुख होइ।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक और कवि का क्या नाम है? (1)

(i) पद—मीरा
(ii) साखी—कबीर
(iii) मनुष्यता—मैथिलीशरण गुप्त
(iv) पर्वत प्रदेश में पावस—सुमित्रानंदन पंत

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है? (1)

(i) अहंकार और कटु वचन त्यागने का
(ii) स्वयं का आत्मज्ञान करने का
(iii) ईश्वर को समझ पाने का
(iv) पुस्तकीय ज्ञान को त्यागने का

(ग) मीठे वचनों का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? (1)

(i) मन शांत और प्रसन्न हो जाता है
(ii) सुनने वालों को सुख का अनुभव होता है
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) सुनाने वाले को कष्ट का अनुभव होता है

(घ) 'अपना तन सीतल करै' पंक्ति का क्या आशय है? (1)

(i) अपने ऊपर ठंडा जल डालना
(ii) अपने मन को शांत और प्रसन्नचित रखना
(iii) दूसरों के कटु वचन सुनकर शांत बने रहना
(iv) कष्टों में भी मुस्कुराते रहना

उत्तर

(क) (i) **साखी-कबीर** प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक 'साखी' है तथा इसके कवि का नाम 'कबीर' है।

(ख) (i) **अहंकार और कटु वचन त्यागने का** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि हमें अहंकार और कटु वचनों को त्याग कर मीठी वाणी बोलनी चाहिए तथा सबके साथ मधुर व्यवहार करना चाहिए।

(ग) (iii) **(i) और (ii) दोनों** मीठे वचनों का व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे उसका मन शांत और प्रसन्न हो जाता है, साथ ही मीठे वचन सुनने वालों को भी सुख का अनुभव होता है।

(घ) (ii) **अपने मन को शांत और प्रसन्नचित रखना** 'अपना तन सीतल करै' पंक्ति का आशय यह है कि मीठी वाणी बोलने से व्यक्ति अपने मन को शांत रखता है, जिससे वह प्रसन्नचित रहता है।

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए। (1 × 5 = 5)

कई वर्षों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकडूं बैठ गया। फिर खड़ा हो गया...जब खड़े रहने को जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुंह और तीसरा गेट-वे-ऑफ इंडिया पर टूट-फूटकर सैलानियों का नज़ारा बना बावजूद कोशिश, वे फिर से चलने-फिरने के काबिल नहीं हो सके।

(क) बड़े-बड़े बिल्डरों ने किसे पीछे धकेल दिया? (1)

(i) मनुष्य को
(ii) समुद्र को
(iii) जमीन को
(iv) प्रकृति को

(ख) समुद्र के सिमटते जाने का क्या कारण है? (1)

(i) पानी की कमी होना
(ii) समुद्र के किनारे बिल्डरों द्वारा नई इमारतों का निर्माण करना
(iii) समुद्र के किनारों को पानी न मिल पाना
(iv) जमीन का अतिक्रमण करना

(ग) पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं' पंक्ति में 'उसने' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) लेखक के लिए
(ii) समुद्र के लिए
(iii) बच्चे के लिए
(iv) सैलानी के लिए

(घ) जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है–यह पंक्ति किस संदर्भ में कही गई है?
(i) सहनशीलता के
(ii) प्रेम के
(iii) अपनत्व के
(iv) अभिमान के

(ङ) समुद्र ने अपने गुस्से को किस प्रकार प्रकट किया?
(i) सुनामी के माध्यम से
(ii) बड़े-बड़े जहाजों को उठाकर पटकने के माध्यम से
(iii) बाढ़ के माध्यम से
(iv) ये सभी

उत्तर

(क) (ii) **समुद्र** को बड़े-बड़े बिल्डरों ने समुद्र को पीछे धकेल दिया और उसकी जमीन को हथिया कर नई इमारतों का निर्माण कर दिया।

(ख) (ii) **समुद्र के किनारे बिल्डरों द्वारा नई इमारतों का निर्माण करना** गद्यांश के अनुसार समुद्र के सिमटते जाने का कारण समुद्र तटों पर बिल्डरों द्वारा नई इमारतों का निर्माण करना है, जिसके कारण समुद्र लगातार पीछे की ओर सिमटता जा रहा है।

(ग) (ii) **समुद्र के लिए** 'पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं' पंक्ति में उसने शब्द का संबोधन समुद्र के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(घ) (i) **सहनशीलता के** 'जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है'- यह पंक्ति समुद्र की सहनशीलता के संदर्भ में कही गई है।

(ङ) (ii) **बड़े-बड़े जहाजों को उठाकर पटकने के माध्यम से** समुद्र ने अपने साथ की जा रही छेड़छाड़ का गुस्सा बड़े-बड़े जहाजों को खिलौने के समान उठाकर पटकने के माध्यम से प्रकट किया।

9. *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।*

क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी ओर खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। वह हाँफ रहा था। अचानक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक ततांरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सब भयाकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे सिहर उठे।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक और पाठ का नाम क्या है?
(i) निदा फाजली-अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले
(ii) प्रेमचंद-बड़े भाई साहब
(iii) रवींद्र केलेकर-ज्ञान की देन
(iv) लीलाधर मंडलोई-ततांरा-वामीरो कथा

(ख) ततांरा ने क्रोध आने पर क्या किया?
(i) तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा
(ii) तलवार को धरती में घोंप दिया
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) अपने क्रोध को शांत करने के लिए ततांरा ने क्या किया?
(i) वामीरो को प्रेमभरी नजरों से देखा
(ii) गाँव वालों को समझाने का प्रयास किया
(iii) तलवार को धरती में गाड़कर खींचते हुए दूर ले गया
(iv) अपनी तलवार और वामीरो में से एक को चुना

(घ) लोग भय से किस कारण सिहर उठे?
(i) ततांरा के क्रोध को देखकर
(ii) क्रोध के कारण फटती हुई धरती को देखकर
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) ततांरा की तलवार को देखकर

(ङ) धरती के दो टुकड़ों में बँटने का क्या कारण था?
(i) ततांरा-वामीरो का वियोग होना
(ii) ततांरा को देश निकाला मिलना
(iii) ततांरा द्वारा तलवार से धरती पर लंबी रेखा खींचना
(iv) वामीरो की माँ द्वारा गाँव का विभाजन करना

उत्तर

(क) (iv) लीलाधर मंडलोई-तताँरा-वामीरो कथा प्रस्तुत गद्यांश के लेखक का नाम लीलाधर मंडलोई तथा पाठ का नाम तताँरा-वामीरो कथा है।

(ख) (iii) (i) और (ii) दोनों तताँरा ने क्रोध आने पर तलवार निकाली और कुछ विचार करने लगा। क्रोध पर नियंत्रण करने के लिए उसने पूरी ताकत से तलवार को धरती में गाड़ दिया।

(ग) (iii) तलवार को धरती में गाड़कर खींचते हुए दूर ले गया अपने क्रोध को शांत करने के लिए तताँरा अपनी लकड़ी की तलवार को धरती में गाड़कर पूरी शक्ति के साथ खींचता हुआ दूर तक ले गया।

(घ) (iii) (i) और (ii) दोनों तताँरा ने क्रोध में आकर अपनी तलवार से धरती को दो टुकड़ों में बाँट दिया। यह देखकर लोग भय से सिहर उठे।

(ङ) (iii) तताँरा द्वारा तलवार से धरती पर लंबी रेखा खींचना धरती के दो टुकड़ों में बँटने का कारण तताँरा द्वारा क्रोध में तलवार से धरती पर लंबी रेखा खींचना था।

खंड {ब} वर्णनात्मक प्रश्न (40 अंक)

पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक-पुस्तक

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए। (2×3 = 6)

(क) "मुट्ठीभर आदमी, मगर ये दमखम" कथन से क्या तात्पर्य है? 'कारतूस' पाठ के आधार पर लिखिए। (2)

(ख) 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य को कौन-सा मार्ग अपनाने की सलाह दी है? (2)

(ग) 'बड़े भाई साहब' द्वारा लेखक को डाँटने का क्या कारण था? (2)

उत्तर

(क) प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि वजीर अली को बहुत कम व्यक्तियों का साथ प्राप्त था, परंतु कुछ विश्वसनीय लोगों की सहायता से वजीर अली ने पूरी ब्रिटिश फौज को परेशान कर दिया था। उसे पकड़ना मुश्किल था कि कंपनी के फौज के सिपाही भी तंग आ गए थे। फौज का कर्नल वजीर अली के साहस तथा दृढ़ता से अत्यधिक प्रभावित था। ऐसी स्थिति में वह उसके साहस की प्रशंसा करते हुए कहता है "मुट्ठीभर आदमी, मगर ये दमखम।"

(ख) 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य को स्वार्थ का मार्ग छोड़कर परमार्थ का मार्ग अपनाने की सलाह दी है। प्रत्येक मनुष्य को मानवतावादी गुणों का पालन करते हुए उन्नति के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। कवि चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने व अपनों के हितों से पहले दूसरों के हितों का चिंतन करे।

(ग) बड़े भाई साहब द्वारा लेखक को डाँटने का कारण यह था कि लेखक पढ़ाई के प्रति लापरवाह था और वह दिन भर मस्ती करता था। लेखक की रुचि खेलने-कूदने, पतंगबाजी, उधम मचाने इत्यादि कार्यों में अधिक थी। बड़े भाई साहब चाहते थे कि वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करे, व्यर्थ के कार्यों में समय की बर्बादी न करे।

11. एक सैनिक का अपने देश या राष्ट्र के लिए परम कर्तव्य क्या माना गया है? 'कर चले हम फ़िदा' कविता के आधार पर लगभग 60-70 शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (4)

उत्तर

किसी भी सैनिक का अपने देश या राष्ट्र के लिए बलिदान देना परम धर्म एवं कर्तव्य माना जाता है। इसी धर्म और कर्तव्य का पालन करते हुए एक सैनिक राष्ट्रहित में अपना बलिदान देते समय दुःखी नहीं होता, बल्कि गर्व का अनुभव करता है। वह अपनी भारत माता की रक्षा एवं सेवा के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी के साथ करता है। इस प्रकार कहा जाना चाहिए कि अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करते समय हमें दुःखी नहीं होना चाहिए, बल्कि गौरवान्वित अनुभव करते हुए अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए, जैसा कि हमारे देश के प्रत्येक सैनिक किया करते हैं।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए।

(क) 'टोपी शुक्ला' पाठ के माध्यम से लेखक राही मासूम रज़ा ने पाठको को क्या संदेश देना चाहा है? प्रस्तुत पाठ में मानवीय संबंधों की किस सच्चाई को उजागर किया गया है?

(ख) परिवार के लोगों के किस प्रकार के व्यवहार से आहत होकर हरिहर काका को अपने प्रिय स्थान (घर) को छोड़कर ठाकुरबारी जैसी संस्था में रहना पड़ा? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ग) 'सपनों के-से दिन' पाठ में लेखक को कब लगता कि वह भी एक फ़ौजी है? कारण सहित लिखिए।

उत्तर

(क) 'टोपी शुक्ला' पाठ के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता है कि प्रेम किसी जात-पाँत, धर्म, संप्रदाय आदि को नहीं मानता है। इफ़्फ़न की दादी एवं टोपी के बीच एक ऐसा मानवीय संबंध स्थापित हो गया था, जिसे किसी परिभाषा से व्यक्त नहीं किया जा सकता था। मानवीय संबंधों की इसी सच्चाई को 'टोपी शुक्ला' पाठ में प्रकट करने की कोशिश की गई है। लेखक इस पाठ के माध्यम से इसी अपनेपन एवं मानवीयता का संदेश देना चाहता है, जिससे मानव-समाज का अस्तित्व बना रहे।

(ख) हरिहर काका पत्नी की मृत्यु के पश्चात्, अपने भाइयों के साथ ही रहने लगे थे, किंतु कुछ सालों के पश्चात् उनके परिवार के सदस्य उनसे दूरी बनाने लगे। उनके मान-सम्मान में कमी आने लगी। घर का बचा हुआ भोजन ही उन्हें दिया जाता था। इस व्यवहार से वे इतने दुःखी हुए कि उनका परिवार से मोहभंग हो गया, इसलिए उन्हें अपने प्रिय स्थान (घर) को छोड़कर ठाकुरबारी जैसी संस्था में रहना पड़ा।

(ग) स्काउट परेड में भाग लेने के लिए लेखक बचपन में अपने दोस्तों के साथ शान से जाता। उनके कपड़े धोबी द्वारा धुले होते। साफ़ वर्दी, पॉलिश किए बूट तथा जुराबों को पहनकर बच्चे स्वयं को फ़ौजी जवान ही समझते थे। उनके साथ-साथ लेखक को भी लगता कि वह भी एक फ़ौजी है। विद्यालय में पीटी शिक्षक प्रीतमचंद द्वारा परेड कराते हुए लेफ़्ट-राइट की आवाज़ तथा सीटी की ध्वनि पर बूटों की एड़ियों को दाएँ-बाएँ मोड़कर ठक-ठक करते अकड़कर चलते समय विद्यार्थी अपने को बिलकुल फ़ौजी जवान के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझते। वर्दी तथा परेड के उत्साह ने उसमें यह भाव जगाया था। यही कारण था कि स्काउट परेड करते समय लेखक स्वयं को फ़ौजी जवान समझने लगता था।

लेखन

13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

1. राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का योगदान

संकेत बिंदु
- देश की शक्ति का मुख्य आधार : युवा
- युवा तथा राष्ट्र : एक सिक्के के दो पहलू
- सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में सक्षम
- उपसंहार

उत्तर

युवा, प्रत्येक देश के भावी कर्णधार होते हैं। किसी भी राष्ट्र की शक्ति का आकलन उसके युवावर्ग से किया जाता है। यदि युवावर्ग अनुशासित, सच्चरित्र और देशभक्त हैं, तो फिर देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। युवा तथा राष्ट्र, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी राष्ट्र का जैसा युवावर्ग होता है, वैसा ही राष्ट्र का निर्माण होता है। युवावर्ग ही किसी भी राष्ट्र का एक ऐसा वर्ग है, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों को नष्ट कर सकता है।

युवावर्ग में असीम शक्ति, अदम्य विश्वास व ऊर्जा होती है, जिसके बल पर वे सामाजिक कुरीतियों; जैसे—दहेज प्रथा, बालविवाह, भ्रष्टाचार, जातिवाद, सांप्रदायिकता आदि को दूर कर सकते हैं। युवावर्ग ऐसी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का क्रियान्वयन करे, जो सबकी हो, सबके लिए हो और जिससे सब लाभान्वित हों। निसंदेह, युवा देश के विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र निर्माण के कार्य में युवाओं का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

2. मोबाइल फ़ोन

संकेत बिंदु
- एक बड़ी क्रांति
- मोबाइल फ़ोन से हानि
- मोबाइल से लाभ
- उपसंहार

उत्तर

दूरसंचार में जिस बहुत बड़ी क्रांति का पदार्पण हुआ है, वह है मोबाइल फ़ोन अर्थात् सचल दूरभाष यंत्र। मोबाइल फ़ोन एक ऐसा यंत्र है, जिसने दुनिया को सीमित कर दिया है। मोबाइल फ़ोन ने जहाँ भौतिक दूरियों को घटा दिया है, वहीं आत्मीय दूरियाँ बढ़ा भी दी हैं। नियमित मोबाइल का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। रेडियोधर्मी किरणों के दुष्परिणाम से कैंसर, ब्रेन ट्यूमर व हार्ट की समस्याएँ आज सामान्य हो गई हैं। इसके लाभ भी अनेक हैं, जहाँ पहले मित्रों की सूचनाएँ महीनों में मिल पाती थीं, गाँवों में तार पहुँचने में महीनों लग जाते थे, आज मिनटों में ... जाते हैं।

16. किसी पुस्तक प्रकाशन की ओर से 25-50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। (5)

अथवा

पेन बनाने वाली किसी प्रसिद्ध कंपनी की ओर से 25-50 शब्दों में विज्ञापन लेखन कीजिए।

उत्तर

अथवा

17. 'करनी कथनी से अधिक ताकतवर होती है', उक्ति के आधार पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघु कथा लिखिए। (5)

अथवा

'सब दिन होत न एक समान', उक्ति को आधार बनाकर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघु कथा लिखिए।

उत्तर

उक्ति का अर्थ ''करनी कथनी से अधिक ताकतवर होती है''-प्रस्तुत उक्ति का अर्थ यह है कि मनुष्य को मात्र बातें करने की अपेक्षा कर्म भी करना चाहिए। यदि मनुष्य कोई बदलाव चाहता है, तो उसे उसके लिए दूसरे पर ही निर्भर न रहकर, स्वयं उस बदलाव के लिए आगे आकर उपयुक्त कर्म करना चाहिए।

कथा एक समय की बात है। एक जंगल में बहुत सारे पशु रहते थे। वह जिस रास्ते से आते-जाते थे, उस रास्ते पर एक बहुत बड़ा पत्थर पड़ा हुआ था। जो भी पशु वहाँ से गुजरता, उस पत्थर से चोटिल अवश्य होता था। सभी पशु आते-जाते उस पत्थर को कोसते रहते। उसे बुरा-भला कहते थे, लेकिन किसी ने भी उस पत्थर को हटाने का प्रयास नहीं किया। एक दिन एक खरगोश उस रास्ते से गुजरते हुए उस पत्थर से ठोकर खाकर घायल हो गया। अब उसने उस पत्थर को रास्ते से हटाने की ठान ली। इस कार्य में मदद पाने के उद्देश्य से वह जंगल के राजा शेर के पास गया। शेर को उस पत्थर के विषय में बताया, ताकि शेर अपनी प्रजा की इस जटिल समस्या को हल कर सके। शेर ने खरगोश की सारी बातें ध्यानपूर्वक

भूमि और उसे आश्वासन दिया कि वह अवश्य ही उस पत्थर को वहाँ से हटवा देगा। परंतु शेर ने पत्थर को वहाँ से नहीं हटवाया। कुछ समय पश्चात् खरगोश ने पशुओं के साथ मिलकर उस पत्थर को हटाने के लिए विचार-विमर्श किया। सभी पशुओं ने उसका समर्थन किया और पत्थर को रास्ते से हटाने में सहयोग देने की बात की। अगले दिन सुबह खरगोश जंगल के जानवरों का इंतजार करता रहा, परंतु कोई भी उस पत्थर को हटाने के काम में मदद करने नहीं आया। अब वह स्वयं ही उस पत्थर को हटाने चल दिया। खरगोश भली-भाँति जानता था कि अकेले इस कार्य को करना आसान नहीं होगा। वह केवल कथनी पर विश्वास न कर, करनी पर अधिक विश्वास रखता था। अतः रोज सुबह प्रतिदिन उस पत्थर को हटाने के लिए भरसक प्रयास करता। वह अकेला ही बहुत कठिनाई से लंबे समय तक युक्तिपूर्वक पत्थर को धकेलता रहा और अंततः पत्थर को रास्ते से हटाने में सफल हो गया।

सीख इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि यदि हम कोई बदलाव चाहते हैं, तो हमारे कहने भर से नहीं होता है, उसके लिए हमें कथनी और करनी एक करनी पड़ती है। जब हम आगे नहीं आते, तो हमें किसी वस्तु में दोष भी नहीं निकालना चाहिए।

अथवा

उक्ति का अर्थ "सब दिन होत न एक समान" प्रस्तुत उक्ति का आशय यह है कि समय परिवर्तनशील है। जिस प्रकार दिन के बाद रात तथा रात के बाद दिन होता है, उसी प्रकार सुख के बाद दुःख तथा दुःख के बाद सुख का क्रम चलता रहता है। परिवर्तन ही प्रकृति और जीवन का शाश्वत नियम है। यह नियम निरंतर चलता रहता है। कभी किसी के दिन एकसमान नहीं रहते।

कथा नेहा तथा चंचल दोनों एक ही कक्षा में पढ़ती थीं। नेहा अत्यंत संपन्न एवं धनी परिवार से थी, जबकि चंचल निर्धन परिवार से संबंध रखती थी। नेहा प्रतिदिन उसकी गरीबी का मजाक उड़ाती। उसे परेशान करने का कोई अवसर नहीं छोड़ती थी। नेहा अन्य सहपाठियों पर भी अपने धन का रौब जमाती थी, परंतु विद्यार्थी चुप रह जाते। कोई उसका प्रत्युत्तर नहीं करता था। एक दिन स्कूल में समारोह का आयोजन किया गया। नेहा धनी परिवार से होने के कारण सर्वाधिक महँगी एवं आकर्षक पोशाक पहन कर आई, जबकि चंचल साधारण-सी पोशाक पहन कर आई थी। नेहा ने अपने सभी मित्रों के सामने चंचल का बहुत मजाक उड़ाया।

उसकी पोशाक पर तथा उस पर तरह-तरह के व्यंग्य किए। वह रोते हुए विद्यालय से घर आई। कुछ दिनों के बाद नेहा के पिताजी को व्यापार में बहुत बड़ा नुकसान हुआ। वह ऋण के बोझ तले दबते चले गए। धीरे-धीरे वह पूर्ण रूप से दिवालिया हो गए। अब नेहा की दशा भी चंचल की भाँति गरीबों वाली हो गई थी। उसे अन्य विद्यार्थियों विशेषकर चंचल के साथ किए गए व्यवहार पर बहुत पछतावा हुआ। तब उसने यह निश्चय किया कि वह अब कभी किसी की स्थिति का मजाक नहीं उड़ाएगी।

सीख इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि संपन्न व सुखी व्यक्तियों को अपने से कमजोर या निर्धन व्यक्ति का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि सभी दिन एक समान नहीं होते। यदि कोई मनुष्य आज सुखी एवं साधन संपन्न है, तो कल दुःखी एवं साधन-विहीन भी हो सकता है। अतः किसी से भी गरीब-अमीर का भेद नहीं करना चाहिए। सभी से कुशलतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अपने सुखमय दिनों पर कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए और न ही किसी निर्धन, गरीब व्यक्ति का मजाक उड़ाना चाहिए।